THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

मातृदिवस पर एक श्रद्धांजलि
a Mother's Day tribute

Author – Poonam Likhi

www.spirituality.com

5 June , 2010

इस वर्ष जब मैं मातृदिवस के बारे में सोचती हूँ मेरा हृदय अति कृतज्ञता और प्रेम से भर जाता है। दुनिया भर के लाखों लागों की तरह, मैं इस दिन को सभी माताओं का सम्मान करने, अपने बच्चों की परवरिश के लिए तथा उन्हें निरन्तर सम्भाल और देखरेख प्रदान करने के लिए धन्यवाद देने के लिए अवसर के रूप में लेती हूँ।

जब मैं एक माँ के नि:स्वार्थ प्रेम के बारे में सोचती हूँ, मेरे मन में सदा मेरी बेकर ऐडी द्वारा, साँयस एण्ड हैल्थ विद कि टू स्किपर्स में लिखी ये पक्तियाँ आती हैं : "एक माँ का प्रेम उसके बच्चे से अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि माँ के प्रेम में पवित्रता और स्थिरता शामिल होती है जो दोनों अनश्वर है" (पृष्ठ 60)।

मैंने उन्हे सदा अपनी (दिव्य) कानून में माँ के रूप मे सोचा

मैं खुशी और सन्तुष्टि की एक गहरी भावना के साथ भर जाती हूँ जब मैं अपनी सास के बारे में सोचती हूँ। वह सही मायने में प्रेम का प्रतीक थीं। वह अपने सम्पूर्ण वार्तालाप के माध्यम से किसी भी आयु वर्ग के सभी लोगों को प्रेम कर पायीं। मैं प्राय: उनकी प्रशंसा किया करती थी एक परिपक्व उम्र में नई तकनीकों के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए मात्र एक साधारण इच्छा के लिए ताकि वह अपने पोते–पोतियों और उनके दोस्तों से कुछ वार्तालाप कर सके। किसी को भी उनके साथ पहली मुलाकात में प्रेम हो जाता था और उन्हें जीजी बुलाना शुरू कर देता था, उस नाम से जिसके द्वारा उनके बच्चे उन्हें बुलाया करते थे।

मेरे देश भारत में सास और बहु के बीच रिश्तों के बारे में भम्रों के विपरीत मेरी सास वो इन्सान थी जिन्होंने मुझे पुरूषों और स्त्रियों के बीच समानता का दावा करना और अपने आप को एक स्त्री के रूप में महत्व देना सिखाया।

उनका प्रेम परमेश्वर का एक उपहार था इसलिए मैंने उन्हें सदा अपनी (दिव्य) कानून में माँ के रूप में सोचा। उनमें दूसरों को प्रेम करने की अद्भुत क्षमता थी। यद्यपि उनको चलने के लिए वॉकर के सहारे की जरूरत पड़ती थी पर चुनौतिपूर्ण समय में दूसरों को सहारा देने में वह कभी नहीं थकती थी। उनके परिवार के सदस्य, पड़ौसी तथा मित्र उनसे सलाह लेने के लिए फोन किया करते थे।

उनके गुण अनन्त है, विशेषतय: निस्वार्थ प्रेम।

दूसरा गुण जिसने मुझे प्रभावित किया वह था तुरन्त माफ कर देना। एक दिन मैंने सुना हमारी एक रिश्तेदार,

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

जो उनसे मिलने आयी थी, उनसे कठोर शब्द बोल रही थी। मैं शीघ्रता से कमरे में गई परन्तु मेरी सास का मुस्कुराता हुआ चेहरा देखकर मैं हैरान थी। वह गलतफहमी को दूर करने का प्रयास कर रहीं थीं। हमारे रिश्तेदार के जाने के बाद, मैंने इस स्त्री के गुस्से का कारण पूछा। वह बोली ''कुछ नहीं प्रिय'' और यह समझाना जारी रखा कि उन्होंने सोचा कि इस स्त्री ने प्रेम की कमी महसूस की है। फिर उन्होंने यह अपने लिए कहा, ''मैं अधिक प्रेम कर सकती हूँ''। सच में जीवंत प्रेम का एक उदाहरण!

आज वह हमारे साथ शारीरिक रूप से नहीं हैं, परन्तु मैं जानती हूँ उनके गुण अनन्त हैं, विशेषतयः निःस्वार्थ प्रेम। अब वह हमारे हृदयों में रहती हैं। जब मैं उन्हे याद करती हूँ, मैं प्राय एक सुन्दर भजन की प्रारम्भिक पंक्तियाँ गाती हूँ (क्रिश्चियन साँयस हिम्नल, सं॰ 23)। यह भजन मेरी बेकर ऐडी द्वारा लिखित एक कविता से आया है :

''हे तुम जीवंत प्रेम की मृदु किरण,

तथा मृत्यु रहित जीवन!''

और इसलिए मैं दुनिया भर की सभी माताओं को कहना चाहती हूँ शुभ मातृ (प्रेम) दिवस!

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.